अग्रपूजा

—'अग्रपूजा'; पं० रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित खण्डकाव्य है। इसमें श्रीकृष्ण के पावन चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। युधिष्ठिर ने अपने राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण को सर्वश्रेष्ठ मानकर सर्वप्रथम उनकी पूजा (अग्रपूजा) की थी। श्रीकृष्ण की यही अग्रपूजा प्रस्तुत खण्डकाव्य के कथानक का केन्द्रबिन्दु है। इसी अग्रपूजा में खण्डकाव्य के प्रमुख नायक श्रीकृष्ण और सहनायक युधिष्ठिर के चरित्र की उज्ज्वलता एवं प्रतिनायक शिशुपाल के चरित्र का कालुष्य निहित है। अतः कवि ने इसी के आधार पर इस खण्डकाव्य का नामकरण किया है, जो सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण है।

इस खण्डकाव्य का कथानक छह सर्गों में विभक्त है। सम्पूर्ण खण्डकाव्य का सर्गवार सारांश निम्नलिखित है—

प्रथम सर्ग (पूर्वाभास)

(2006, 09, 10, 13, 14, 15, 17, 19)

पाण्डवों के जीवन को समाप्त करने के लिए दुर्योधन अनेक प्रकार के षड्यन्त्र रच रहा था। पाण्डवों को लाक्षागृह में ठहराकर उसने वहाँ आग लगवा दी। पाण्डव लाक्षागृह से जीवित बच निकलने के बाद छद्मवेश में द्रौपदी के स्वयंवर में पहुँचे। उधर दुर्योधन ने सोचा कि पाण्डव जलकर भस्म हो गए होंगे; अतः वह स्वतन्त्रतापूर्वक दुराचरण करने लगा। द्रौपदी के स्वयंवर में पहुँचकर अर्जुन ने राजा द्रुपद की शर्त के अनुसार मत्स्य-वेध किया। निराश राजाओं ने अर्जुन पर घातक प्रहार किए; परन्तु भीम और अर्जुन ने आक्रमणकारी राजाओं को परास्त कर दिया।

राजा द्रुपद ने द्रौपदी को अर्जुन को सौंप दिया। स्वयंवर में उपस्थित श्रीकृष्ण और बलराम ने भीम एवं अर्जुन को पहचान लिया। रात को वे उनके विश्रामस्थल पर मिले। द्रुपद ने पाण्डवों की वास्तविकता को जानकर उन्हें राजभवन में निमन्त्रित किया। पाण्डव द्रौपदी के साथ माता कुन्ती के पास पहुँचे। कुन्ती की इच्छानुसार द्रौपदी का विवाह पाँचों भाइयों से कर दिया गया। इस अवसर पर उन्हें श्रीकृष्ण द्वारा उपहार तथा द्रुपद द्वारा अत्यधिक दहेज दिया गया। पाण्डवों को जीवित देख तथा द्रौपदी द्वारा उनका वरण करने की घटना से दुर्योधन चिन्तित हो उठा। हस्तिनापुर पहुँचकर दुर्योधन ने कर्ण को साथ लेकर धृतराष्ट्र से पाण्डवों के सर्वनाश का परामर्श भी किया—

सुख कैसे उनके रहते मैं
पा सकता हूँ सोचें आप।
निष्कण्टक यदि राज्य न होगा
नहीं मिटेगा मन का ताप।।

धृतराष्ट्र ने भीष्म, द्रोण तथा विदुर की सलाह से पाण्डवों तथा कौरवों में आधा-आधा राज्य बाँटने का निश्चय किया। पाण्डवों को बुलाने के लिए विदुर को भेजा गया। विदुर के साथ कुन्ती, द्रौपदी, श्रीकृष्ण तथा पाण्डव हंस्तिनापुर आए। हस्तिनापुर की जनता ने पाण्डवों का स्वागत किया। दूसरे दिन धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर दिया। इसके पश्चात् गुरुजनों से विदा लेकर पाण्डव; कुन्ती तथा अपनी पत्नी द्रौपदीसहित; खाण्डव वन की ओर चल दिए।

द्वितीय सर्ग (समारम्भ)

खाण्डव वन में पहुँचकर श्रीकृष्ण ने स्वर्गलोक जैसा 'इन्द्रप्रस्थ' तैयार करा दिया। जो व्यक्ति पाण्डवों के साथ हस्तिनापुर आए थे, वे सभी वहाँ सुखपूर्वक रहने लगे। कुछ दिन पश्चात् श्रीकृष्ण पाण्डवों से आज्ञा लेकर द्वारका लौट आए। श्रीकृष्ण के जाते समय पाण्डव व्याकुल हो उठे। धर्मराज युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा पूर्णतः प्रसन्न थी। वहाँ के गुरुकुल में विद्याध्ययन करते हुए शिष्यजन शिष्ट व्यवहार करते थे। सभी व्यक्ति बड़ों का आदर तथा छोटों से प्यार करते थे तथा कहीं भी उच्छृंखलता के दर्शन नहीं होते थे। धर्मराज के सुन्दर राज्य की कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी।

तृतीय सर्ग (आयोजन)

पाण्डवों के आपसी मतभेद को शान्त करने के लिए नारदजी ने यह प्रस्ताव रखा कि द्रौपदी बारी-बारी से एक-एक वर्ष तक एक पति के साथ रहे। एक पति के साथ रहने पर यदि दूसरा पति उसे देख ले तो वह पति बारह वर्ष तक वन में रहे। इस नियम की काव्यात्मक अभिव्यक्ति निम्नलिखित है—

साथ एक के रहे वर्ष वह,
और रहे जब एक समीप।
देख उसे ले अन्य, जाय वह
बारह वर्ष अरण्य प्रतीप॥

एक दिन एक तस्कर, ब्राह्मणों की गायों को लेकर चल दिया। ब्राह्मणों ने राजद्वार पर जाकर सहायता माँगी। अर्जुन शस्त्रागार से शस्त्र लेने के लिए गए और गायों को छुड़ाकर ब्राह्मणों को सौंप दिया। शस्त्रागार में द्रौपदी तथा युधिष्ठिर को एक साथ बैठे देखने के कारण अर्जुन नारद-नियम के अनुसार वनवास के लिए चल दिए। अनेक स्थानों पर घूमते हुए अर्जुन द्वारका पहुँचे तथा वहाँ श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करके इन्द्रप्रस्थ लौट आए। श्रीकृष्ण सुभद्रा के लिए प्रचुर दहेज लेकर इन्द्रप्रस्थ आए तथा बहुत दिनों तक वहाँ रहे।

श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने अग्निदेव की तृप्ति के लिए खाण्डव-दाह किया। अग्निदेव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को चार श्वेत घोड़े तथा अबाध गतिवाला कपिध्वज रथ प्रदान किया। वरुण ने गाण्डीव धनुष और दो अक्षय तूणीर दिए। श्रीकृष्ण को अग्नि ने कौमुदी गदा और सुदर्शन चक्र उपहारस्वरूप दिए। मय दानव ने अग्नि की

लपटों से व्याकुल होकर जीवन-रक्षा की माँग की। अर्जुन ने उसे अभयदान देकर बचा लिया। मय दानव ने प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण के कहने पर धर्मराज के लिए अलौकिक सभा-भवन तैयार किया। उसने अर्जुन को शंख तथा भीम को भारी गदा भी प्रदान की।

एक दिन प्रात:काल पाण्डवों के पास नारदजी आए। उन्होंने युधिष्ठिर से पाण्डु का यह सन्देश कहा कि वह राजसूय यज्ञ करें, जिससे कि मैं (पाण्डु) इन्द्रलोक में निवास करूँ, फिर तुम भी वहाँ आ सकोगे। युधिष्ठिर ने नारदजी के माध्यम से सन्देश भेजकर श्रीकृष्ण को इन्द्रप्रस्थ बुलवाया और राजसूय यज्ञ की बात कही। श्रीकृष्ण ने कहा कि आप जरासन्ध पर विजय प्राप्त किए बिना सम्राट् नहीं बन सकते और क्योंकि सम्राट् बने बिना राजसूय यज्ञ होना असम्भव है, इसलिए सर्वप्रथम जरासन्ध का वध किया जाना चाहिए। भीम, अर्जुन और मैं (श्रीकृष्ण) गिरिव्रंज जाकर उसे द्वन्द्वयुद्ध में मारें। जरासन्ध ने रुद्र यज्ञ में बलि देने के लिए दो हजार राजाओं को कैद कर रखा है। मैं उन राजाओं को छुड़ाने का आश्वासन देकर आया हूँ। इस सम्बन्ध में निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

मार्ग अबाध खुलेगा मख-हित
जरा-सुवन का काम तमाम।
आर्त नृपों के प्राण बचाकर
एक साथ होंगे दो काम॥

युधिष्ठिर से अनुमति प्राप्त करके श्रीकृष्ण, भीम तथा अर्जुन जरासन्ध के पास पहुँचे। जरासन्ध ने भीम से द्वन्द्वयुद्ध करने का निर्णय लिया। तेरह दिनों तक द्वन्द्वयुद्ध होता रहा। भीम ने जब जरासन्ध को थका हुआ जाना तो उसे टाँगें पकड़कर उठा लिया और जमीन पर पटक दिया। श्रीकृष्ण के संकेत पर भीम ने जरासन्ध को टाँगों के बीच से चीर दिया। जरासन्ध का क्रिया-कर्म करके उसके पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक किया गया। सहदेव तथा कैद से मुक्त राजाओं ने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार की। कुछ दिनों पश्चात् श्रीकृष्ण ने धर्मराज से विदा ली। युधिष्ठिर ने चारों भाइयों अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव को दिग्विजय के लिए भेजा। सारा भारतवर्ष युधिष्ठिर की छत्रच्छाया में एक हो गया। सम्पूर्ण देश समृद्ध हो गया। फिर युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के लिए सभी राजाओं को निमन्त्रित किया। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को इस यज्ञ में लाने के लिए द्वारका की ओर प्रस्थान किया।

चतुर्थ सर्ग (प्रस्थान)

जब अर्जुन निमन्त्रण लेकर द्वारका पहुँचे तो उन्होंने एकान्त में श्रीकृष्ण से कहा कि पाण्डव कुल की लाज उनके ही हाथ में है। अर्जुन को विदाकर श्रीकृष्ण ने बलराम एवं उद्धव से कहा कि राजसूय यज्ञ में सभी राजा निमन्त्रित हैं। सभा में कुछ भी असाधारण घटना घटित हो सकती है; अतः उन्हें सेनासहित चलना चाहिए। श्रीकृष्ण सेनासहित इन्द्रप्रस्थ पहुँचे। श्रीकृष्ण के आने की सूचना पाकर युधिष्ठिर ने उनका अनुपम स्वागत किया, जिसे देखने सारा नगर उमड़ पड़ा। श्रीकृष्ण के स्वागत-सत्कार को देखकर शिशुपाल तथा रुक्मी को ईर्ष्या होने लगी। शिशुपाल तथा रुक्मी स्वयं को पाण्डवों से श्रेष्ठ मानते थे। श्रीकृष्ण ने रुक्मी की बहन रुक्मिणी को अपनी पटरानी बना लिया था। रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल से होने वाला था; अतः उसके मन में भी श्रीकृष्ण के प्रति ईर्ष्या का भाव विद्यमान था।

पंचम सर्ग (राजसूय यज्ञ/अग्रपूजा)

Gyansindhu Coaching Classes

यह सर्ग **मन को सर्वाधिक प्रभावित करनेवाला सर्ग** है; क्योंकि इसमें श्रीकृष्ण की निरभिमानता को प्रदर्शित किया गया है। यज्ञ की सुव्यवस्था के लिए विभिन्न व्यक्तियों में काम बाँट दिया गया। श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणों के चरण धोए। सब राजा अपने-अपने आसन पर बैठने लगे। सर्वप्रथम पूजन के लिए सहदेव ने श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित किया। जब सभासदों के बीच श्रीकृष्ण आए तो सभी राजा खड़े

हो गए, केवल शिशुपाल ही अपने आसन से न हिला। अग्रपूजा के लिए कृष्ण को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया था; अत: भीम ने सहदेव से कहा कि तुम सर्वप्रथम श्रीकृष्ण को और उनके पश्चात् समस्त उपस्थित पूज्य राजाओं को अर्घ्य दो। सबने इसका अनुमोदन किया, किन्तु शिशुपाल ने इसका विरोध किया। शिशुपाल द्वारा श्रीकृष्ण की निन्दा किए जाने पर भीष्म उठ खड़े हुए, परन्तु शिशुपाल भीष्म के मुख से श्रीकृष्ण की प्रशंसा और अग्रपूजा के लिए श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित होने की बात को सहन नहीं कर सका। यहाँ भीष्म का यह कथन द्रष्टव्य है—

स्वार्थ-हानि, ईर्ष्यावश होने
से हो जाते मानव अन्ध।
गुण भी दोष दिखाई पड़ते
यश सौरभ देता दुर्गन्ध।।

वह श्रीकृष्ण की ओर प्रहार करने के लिए दौड़ा, परन्तु श्रीकृष्ण प्रसन्नचित्त मुद्रा में बैठे रहे। सभा शान्त थी। वह जिधर भी प्रहार करने के लिए दौड़ता, उसी दिशा में उसे श्रीकृष्ण का हँसता हुआ मुख दिखाई देता। अन्तत: शिशुपाल हाँफ गया। श्रीकृष्ण ने उससे शान्त भाव से कहा कि तू मेरा फुफेरा भाई है, इसलिए अब तक तेरे द्वारा किए गए इस दुर्व्यवहार को मैंने क्षमा कर दिया। अब कहीं ऐसा न हो कि तुझे दण्ड देना पड़ जाए। शिशुपाल फिर भी श्रीकृष्ण की निन्दा करता रहा; तब श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र द्वारा उसका सिर काट दिया। धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने आदरपूर्वक उसका अन्तिम संस्कार किया तथा उसके पुत्र का राज्याभिषेक किया।

षष्ठ सर्ग (उपसंहार)

राजसूय यज्ञ का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। व्यास, धौम्य आदि सोलह ऋषियों ने विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न किया। युधिष्ठिर ने दान-दक्षिणा देकर सब ऋषियों का सत्कार किया और सभी अतिथि राजाओं को आदर-सत्कार से सन्तुष्ट किया। उन्होंने बलराम तथा श्रीकृष्ण को धन्यवाद दिया। व्यास आदि ऋषियों ने युधिष्ठिर को अपना आशीर्वाद प्रदान किया; जिसे उन्होंने नतमस्तक होकर स्वीकार किया।